सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीतिअपार्टमेंट ,आई.पी.एक्सटेंशन,

पटपडगंज,दिल्ली - ११००९२

कक्षा:-8	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ:3

पाठ -3 (सभ्य बनने की सनक)

मौखिक कौशल

1. गाँधी जी के मित्र ने गाँधी जी के बारे में यह मान लिया था कि मांसाहार न करने से वे कमजोर और भोंदू हो जाएँगे।

2. गाँधी जी जानना चाहते थे कि सूप में माँस तो नहीं है इसलिए उन्होंने बैरे को बुलाया था।

3. गाँधी जी ने संध्याकालीन सूट दस पौंड में बनवाया था।

4. डेविड चाल्र्स बेल की पुस्तक का नाम 'स्टैंडर्ड एलोक्युशनिस्ट' था।

5. गाँधी जी ने माह खर्च के लिए पंद्रह पौंड की रकम निर्धारित कर रखी थी।

लिखित कौशल

1. (क) आहार संबंधी पुस्तकों को पढ़कर गाँधी जी पर यह प्रभाव पड़ा कि उनके जीवन में भोजन के प्रयोगों ने महत्त्वपूर्ण स्थान ले लिया।

(ख) होटल में गाँधी जी के सूप न पीने की बात पर उनके मित्र नाराज हो गए थे।

(ग) गाँधी जी के मित्र को लगता था कि यदि वे (गाँधी जी) मांसाहार नहीं करेंगे तो अंग्रेज समाज में हिल-मिल नहीं सकेंगे। गाँधी जी को अपने मित्र का यह भय दूर कर देना जरूरी लगा। इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि वे जंगली नहीं रहेंगे तथा सभ्यों के तौर-तरीके सीखेंगे।

(घ) सभ्य बनने के लिए गाँधी जी ने 'आर्मी एंड नेवी स्टोर' में कपड़े सिलवााए। 'चिमनी' हैट ली और इतने से संतोष न होने पर दस पौंड खर्च करके संध्याकालीन सूट बनवाया। अपने

भाई से जेबों में लटकाई जाने बाली असली सोने की चेन मँगवाई तथा टाई बाँधने की कला भी सीखी।

(ङ) संगीत और नृत्य सीखने के लिए गाँधी जी एक कक्षा में भर्ती हुए। वहाँ एक सत्र के तीन पौंड शुल्क के दिए। तीन सप्ताह में कोई छह सत्र लिए होंगे। ठीक ताल पर पाँव न पड़ते थे। पियानो बजाते तो थे, पर वह क्या कह रहा है, यह समझ में न आता था। तीन पौंड वायलिन खरीदने में खोए और कुछ उसकी तालीम के लिए भी। भाषण कला सीखने के लिए तीसरे उस्ताद का घर ढुँढा। उन्हें भी एक गिन्नी की भेंट तो चढ़नी ही पड़ी। डेविड चार्ल्स बेल द्वारा लिखित भाषण कला की प्रसिद्ध पुस्तक 'स्टैंडर्ड एलोक्युशनिस्ट' खरीदी और उसे पढ़ना शुरू किया।

(च) डेविड चार्ल्स बेल की पुस्तक पढ़ने पर गाँधी जी को ज्ञान हुआ कि उन्हें इंग्लैंड में जिंदगी कहाँ बितानी है? लच्छेदार भाषण सीखकर क्या होगा? नाच-नाचकर मैं सभ्य कैसे बनूँगा? वायलिन तो अपने देश में भी सीखा जा सकता है। मैं तो विद्यार्थी हूँ मुझे तो विद्या-धन जोड़ना चाहिए। मुझे अपने पेशे के लिए जरूरी तैयारी करनी चाहिए। मैं अपने सदाचार से सभ्य समझा जा सकूँ तो ठीक है, नहीं तो मुझे यह लोभ छोड़ना चाहिए।

(छ) गाँधी जी बस की सवारी और डाक खर्च रोज लिखते थे और सोने से पहले सदा अपना हिसाब-किताब मिला लेते थे। उनकी यह आदत अंत तक कायम रही।

2. (क) शाकाहार (ख) बजाना (ग) मांसाहार (घ) सभ्यता (ङ) सावधान

मूल्यपरक प्रश्न

1. गाँधी जी भारतीय संस्कृत्ति और मूल्यों से गहराई से जुड़े थे जिस कारण पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध भी उन्हें आकर्षित न कर सकी। इससे गाँधी जी के चरित्र का देश-प्रेम एवं भारतीय सभ्यता-संस्कृति का आदर करने का भाव उजागर होता है।

2. विद्यार्थी का पहला कर्तव्य होता है विद्या का अर्जन करना। विद्या धन सारी उम्र काम आता है और यह कभी समाप्त नहीं होता। अतः एक विद्यार्थी के जीवन में विद्या धन प्राप्त करने से बढ़कर और कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है।